भा.कृ.अनु.प. – केंद्रीय गोवंश अनुसंधान संस्थान
मेरठ, उत्तर प्रदेश - 250 001

लम्पी त्वचा रोग(LSD) के बचाव एवं नियंत्रण हेतु एडवाईज़री

परिचय: लम्पी त्वचा रोग गाय एवं भैंसों में कैप्रीपॉक्स नामक विषाणु से होने वाला संक्रामक रोग है। यह रोग मच्छर, मक्खी एवं चिचड़ियों द्वारा रोगी पशु से स्वस्थ पशु में फैलता है। यह रोग संक्रमित पशु के श्रावों के संपर्क में आने, संक्रमित चारे, पानी आदि से भी स्वस्थ पशु में फ़ैल सकता है। रोगी पशु के संपर्क में आने वाले व्यक्तियों के आवागमन से भी इस रोग के फैलने की संभावना रहती है।

बीमारी के लक्षण:

- बीमारी की शुरुआत में प्रभावित पशु को बुखार आता है तथा इसके २-३ दिन बाद पशु के शरीर पर २-५ सेमी व्यास की गोलाकार गांठें बन जाती हैं।

- बीमारी की तीव्रता अधिक होने की अवस्था में यह गांठें फूटकर त्वचा पर जख्म भी बन जाते हैं तथा इनसे मवाद आने लगता है। यह गांठें मुहं, गले के अंदर एवं श्वशन तंत्र में भी बन जाती हैं।
- दुधारू पशु का दुग्ध उत्पादन घट जाता है। गाभिन पशु में गर्भपात भी हो सकता है।
- बीमारी से ग्रसित अधिकतर पशु २-३ हफ्ते में ठीक हो जाते हैं। बीमारी की अधिक तीव्रता वाले करीब 2-3% पशु जिनमें श्वशन तंत्र प्रभावित हो जाता है उनकी मृत्यु भी हो सकती है।

बचाव एवं नियंत्रण: बीमारी से ग्रसित पशु को स्वस्थ पशुओं से अलग कर देना चाहिए। जिन गाँवों में बीमारी फैली हुयी है वहां बीमार पशु को स्वस्थ पशुओं के संपर्क में आने से बचाव करना चाहिए।

- चूँकि यह बीमारी मच्छर, मक्खियों, चिचड़ियों द्वारा फैलती है अतः इनके नियंत्रण हेतु पशु आवास में साइपरमैथरीन, डेल्टामैथ्रिन, अमितराज़ दवाओं का 2 मिली प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए।

- इन दवाओं के घोल का छिड़काव स्वस्थ पशुओं के शरीर पर बाह्य परजीवियों के नियंत्रण हेतु करना चाहिए।

- बीमारी वाले क्षेत्र से गैर बीमारी वाले क्षेत्र में पशुओं का आवागमन बंद कर देना चाहिए।

- बीमारी फैलने की अवस्था में पशुओं को पशु पैंठ, पशु मेला इत्यादि में नहीं ले जाना चाहिए तथा उक्त क्षेत्र में इन आयोजनों पर पाबंदी लगा देनी चाहिए।

- बीमारी से ग्रसित पशुओं का आवास, पशुओं के प्रबंधन में प्रयुक्त वाहन एवं अन्य उपकरणों की साफ़ सफाई एवं विसंक्रमण सोडियम हाइपोक्लोराइट (2-3%), फॉर्मेलिन (1%) अथवा फिनोल (2%) इत्यादि से नियमित करना चाहिए।

- पशु बाड़े में किसी भी अनावश्यक बाहरी व्यक्ति एवं वाहन को प्रवेश नहीं करने देना चाहिए। पशु बाड़े के प्रवेश द्वार पर नियमित चूना पाऊडर का छिड़काव करना चाहिए।

- पशु आवास में गोबर, मूत्र, पानी, गन्दगी आदि को एकत्रित नहीं होने देना चाहिए।

- संक्रमित पशुओं की देखभाल में लगे व्यक्तियों को जैव सुरक्षा उपायों जैसे साबुन, सैनिटाइजर इत्यादि का नियमित उपयोग करना चाहिए। यदि संभव हो सके तो रोगी एवं स्वस्थ पशुओं का प्रबंधन अलग अलग व्यक्तियों द्वारा करना चाहिए। यदि यह संभव नहीं है तो पहले स्वस्थ पशुओं का प्रबंधन करें तथा बाद में रोगी पशुओं का प्रबंधन करें।

- संक्रमित पशु के दूध का उपयोग उबालकर करना चाहिए।

- रोगी पशु को संतुलित आहार, हरा चारा, दलीया, गुड़ आदि खिलाएं जिससे कि पशु की रोगप्रतिरोधक क्षमता मजबूत रहे।

- बीमारी के बचाव हेतु स्वस्थ पशुओं का टीकाकरण गोट पॉक्स वैक्सीन द्वारा पशुपालन विभाग के पशुचिकित्सक की सलाह के अनुसार करवाना चाहिए।

- संक्रमित पशुओं एवं उनके संपर्क में आये अन्य स्वस्थ पशुओं का टीकाकरण नहीं कराना चाहिए क्योंकि ऐसे पशु इन्क्यूबेशन अवस्था (संक्रमण पशु के शरीर में प्रवेश करने से लेकर पशु में बीमारी के लक्षण प्रदर्शित होने का समय जो कि लगभग ३ हफ्ते होता है) में हो सकते हैं तथा टीकाकरण से इन पशुओं में बीमारी और अधिक तीव्रता से हो सकती है।

- बीमारी फैलने की स्थिति में निकटस्थ पशु अस्पताल के पशुचिकित्सा अधिकारी को सूचित करें क्योंकि यह बीमारी के बचाव एवं नियंत्रण में सहायक होगा।

- बीमारी से ग्रसित सांडों से वीर्य एकत्रीकरण एवं हिमीकरण बंद कर देना चाहिए तथा बीमारी से ठीक होने के बाद ऐसे सांडों का खून एवं वीर्य के नमूने पी सी आर विधि से परीक्षण के बाद विषाणु के लिए नकारात्मक आने पर ही वीर्य उत्पादन शुरू करना चाहिए।

उपचार :

- चूँकि यह एक विषाणुजनित रोग है इसलिए इसकी कोई सटीक दवा नहीं है। सर्वप्रथम रोगी पशु को स्वस्थ पशुओं से अलग कर देना चाहिए।

- पशुचिकित्सक की सलाह के अनुसार बीमारी से ग्रसित पशु को द्वितीयक जीवाणु संक्रमण से बचाव हेतु ऐन्टीबायोटिक दवा तथा बुखार एवं सूजन हेतु ऐंटी-पाइरेटिक, ऐंटी-इंफ्लामेटरी एवं मल्टी विटामिन दवाएं 4-5 दिन तक लगवानी चाहिए।

- पशु की भूख बढ़ाने हेतु हिमालयन बतीसा पाउडर, रूचामेक्स पाउडर आदि हर्बल दवाओं का प्रयोग किया जा सकता है।

- यदि त्वचा पर जख्म बन गए हैं तो जख्मों पर नियमित तौर पर बीटाडीन अथवा अन्य ऐन्टी-सेप्टिक दवा का स्प्रे करना चाहिए। जख्मों के उपचार के लिए कुछ हर्बल दवाएं जैसे टॉपिक्योर, स्कैवोन, चार्मिल, हाइमेक्स इत्यादि बाज़ार में उपलब्ध हैं। जख्मों पर इन दवाओं का स्प्रे किया जा सकता है। यह दवाएं कीट निवारक का भी काम करती हैं।

- कुछ एथनोवेटेरिनरी दवाएं पशु पालक खुद बना सकते हैं जैसे पान के 10 पत्ते, 10 ग्राम काली मिर्च एवं 10 ग्राम नमक को पीस लें एवं गुड़ में मिलाकर दिन में 2-3 बार हफ्ते भर खिलाने से पशु को लाभ मिलता है।

- इसी प्रकार एक एक मुट्ठी भर खोकली (अकलीफ़ा इंडिका), नीम, मेहँदी, तुलसी के पत्ते, दो कली लहसुन एवं 10 ग्रामं हल्दी के साथ पीस लें तथा

इसे 500 मिली नारियल के तेल में मिलाकर उबालें एवं ठंडा करके जख्मों पर लगाने से पशु को आराम मिलता है।

मृत पशु का निस्तारण:

- इस रोग से मृत पशु को गहरे गड्ढे में चूना एवं नमक डालकर दबा देना चाहिए तथा ऐसे पशु को खुले में नहीं फेंकना चाहिए क्योंकि यह बीमारी को और अधिक फैला सकता है।
- मृत पशु के निस्तारण वाला स्थान रिहायशी क्षेत्र, पशु आवास एवं जल श्रोतों से दूर होना चाहिए।
- मृत पशु के परिवहन में उपयुक्त वाहन, पशु आवास को सोडियम हाइपोक्लोराइट (२-३%) से विसंक्रमित कर देना चाहिए। मृत पशु के चारे, दाने को विसंक्रमित कर जला कर नष्ट कर देना चाहिए।
- मृत पशु के स्थान को विसंक्रमित करने के लिए सुखी घास डालकर जला देना चाहिए।

अधिक जानकारी के लिए नीचे दिए टेलीफ़ोन द्वारा आप हमारे संस्थान के विषय विशेषज्ञों से परामर्श ले सकते हैं:

- डॉ संजीव कुमार वर्मा, प्रधान वैज्ञानिक (पशु पोषण): 9933221103
- डॉ अजयवीर सिंह सिरोही, प्रधान वैज्ञानिक (पशु प्रबंधन): 9457071246
- डॉ नेमी चंद, प्रधान वैज्ञानिक (पशु औषधि) 9417150462
- डॉ सुमित महाजन, वैज्ञानिक (पशु औषधि): 7669231229
- डॉ मेघा पाण्डे, वैज्ञानिक (पशु पुनरुत्पादन): 9410971314

आप हमें निम्न पर भी फोलो कर सकते हैं

Website- https://circ.icar.gov.in

https://twitter.com/icar_circ

https://trimurl.co/7YZwR0

https://www.facebook.com/circmeerutcantt

संकलन एवं संपादन

नेमी चंद, सुमित महाजन, मेघा पाण्डे, अजयवीर सिंह सिरोही, संजीव कुमार वर्मा

प्रकाशक

निदेशक, भा.कृ.अनु.प. – केंद्रीय गोवंश अनुसंधान संस्थान, मेरठ, उत्तर प्रदेश - 250 001

प्रकाशन का वर्ष: 2022